नईदुनिया

कविता

अगर पेड़ भी चलते होते

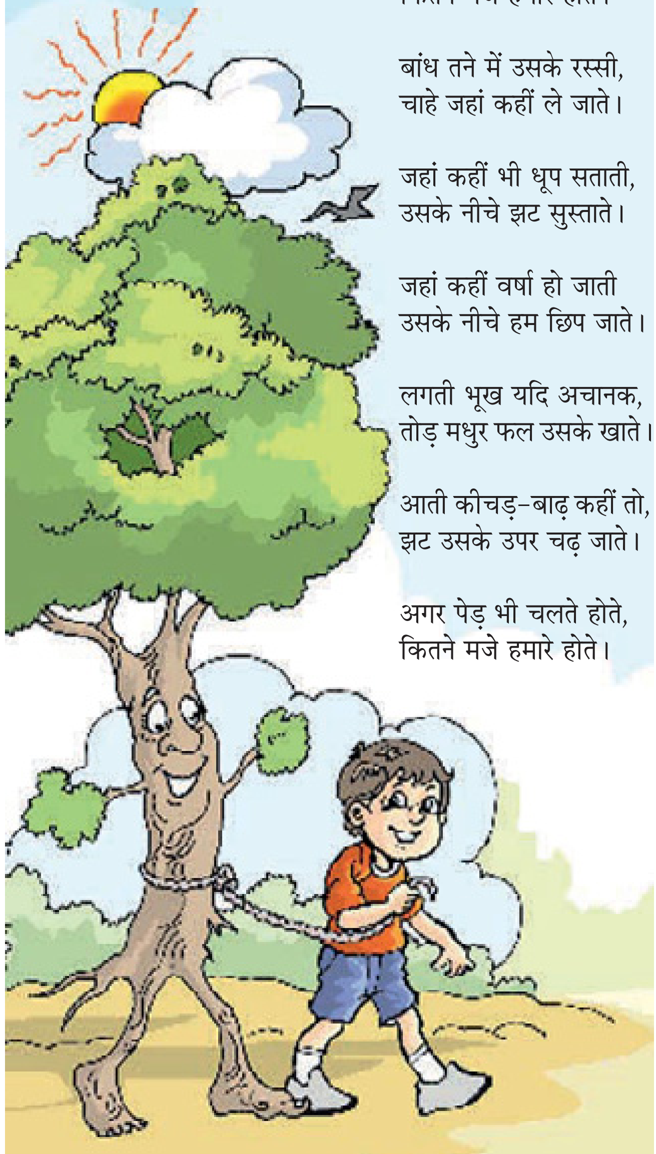

अगर पेड़ भी चलते होते,
कितने मजे हमारे होते।

बांध तने में उसके रस्सी,
चाहे जहां कहीं ले जाते।

जहां कहीं भी धूप सताती,
उसके नीचे झट सुस्ताते।

जहां कहीं वर्षा हो जाती
उसके नीचे हम छिप जाते।

लगती भूख यदि अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते।

आती कीचड़-बाढ़ कहीं तो,
झट उसके उपर चढ़ जाते।

अगर पेड़ भी चलते होते,
कितने मजे हमारे होते।

मैं हूं डोरेमॉन

हाय दोस्तो, पहचान गए न मुझे। हम्मम...मैंने भी कैसा सवाल पूछा न। आप सब अपने डोरेमॉन को कैसे भूल सकते हो। इस बार मैं अपने कुछ खास गैजेट और दोस्तों के साथ आपसे मिलने आया हूं। वैसे तो गैजेट्स आपको ध्यान ही होंगे, पर इनको एक बार और जान लीजिए...

अपने बारे में कुछ ज्यादा बताने की जरूरत है क्या है मुझे ?...नहीं न। अरे! आप मुझे देखते तो हैं हर रोज फिर भी जानना है। अच्छा, ठीक है। समझ गया आप क्या जानना चाहते हैं मेरे बारे में। सब कुछ आपको बताता हूं। मेरा नाम है डोरेमॉन। मैं भविष्य से आया हुआ कैट रोबो यानी बिल्ली रोबोट हूं। मुझे 1967-70 में फुजीमोटो हीरोशी और मोटू एबिको ने निर्मित किया था। मेरा दोस्त है नोबिता नोबी, जिसकी कुछ आदतों से मैं परेशान तो रहता हूं, पर उसकी मदद भी करता हूं। सोचता हूं, एक न एक दिन ये सुधर ही जाएगा। अपने दोस्त के लिए इतना तो किया ही जा सकता है। मुझे और नोबिता को लेकर कई कॉमिक्स और कार्टून बनाए गए। मैं तो भविष्य ये आया हूं, इसलिए मेरे पास बहुत सारे गैजेट्स भी हैं-होमिंग प्लेन, बैंबू कॉप्टर, एनीव्येर डोर, सर्वेंट स्टिकर, टाइम कैमरा, हॉब गोबलिन सील। इनकी शक्तियों के बारे में जानना चाहेंगे। तो फिर चलिए गैज़ेट्स को देखने।

बैंबूकॉप्टर

ये है आपके हैलीकॉप्टर का एडवांस रूप। इसे अपने सिर पर लगा कर फुर्रर...हुआ जा सकता है। बढ़ते ट्रैफिक के जाम से बचने के लिए हैलीकॉप्टर की जरूरत तो होगी, ऐसे में ये अपना बैंबूकॉप्टर है न बड़े काम की चीज।

वुडू कैमरा

इसके बारे में तो आप जानते ही होंगे, जी हां वही कैमरा जिससे किसी की तस्वीर लेने के बाद उसे अपना गुलाम बनाया जा सकता है। एक बार तो नोबिता ने मेरी ही फोटो क्लिक कर ली थी। याद आया न, अब आप हंस भी रहे होंगे। काश...हमारे पास भी होता, ये कैमेरा तो किसी से होमवर्क ही करवा लेते।

टैलिंग बर्ड

इसके मुंह में एक भोंपू होता है। इसे बजाते ही आप जो भी कहोगे, यह उसका प्रचार शुरू कर देगा, लेकिन आपको वह काम करते रहना होगा वर्ना यह प्रचार आपको मुसीबत में डाल देगा।

विश स्प्रैडिंग डॉल

ये एक छोटी सी गुड़िया है। वह तब तक किसी से भी चिपकी रहती है, जब तक दिया गया काम पूरा न हो जाए।

सर्वेंट स्टिकर

इसका इस्तेमाल भी कमाल का है। किसी भी वस्तु पर इसे चिपका दीजिए, फिर देखिए वह आपके कहे अनुसार ही कार्य करने लगेगी।

पिन पॉइंट

यह पिन आप अपनी किसी भी चीज में लगाकर छोड़ दें, यह वहां पहुंच जाएगी, जहां आप जल्दी जाना चाहते हैं। अब आप सोच रहे होंगे कि ये हमें भी मिल जाए, तो क्लास मिस न हो कभी।

टाइम कैमरा

इसमें से बीते समय की तस्वीरें निकल आती हैं। यानी कुछ गुजरे हुए वक्त को वापस मोड़ने में आपकी मदद कर सकता है।

टैलीविजन गैट ए कीप

यह तो अत्यंत आलसी लोगों के लिए अमृतबाण है। इस गैजेट के जरिए आपको टीवी पर चल रहे किसी भी विज्ञापन की कोई भी चीज फटाफट मिल जाएगी। न हींग लगी, न फिटकरी रंग भी आ गया। वो भी चोखो। समय भी बचा और पैसे भी खर्च नहीं हुए।

एनीव्येर डोर

ये है गजब का दरवाजा, इसकी मदद से जहां जाने का मन हो, वहां फट से पहुंचा जा सकता है। वो भी बस एक मिनट में। नोबिता की तरह आप भी यही सोचते होंगे कि हमें भी ये एनीव्येर डोर मिल जाए और हम भी क्लास रूम से फट से प्ले ग्राउंड में पहुंच जाएं। ये तो हुई कुछ गैजेट्स, अब कुछ खास किरदारों से भी आपको मिलना चाहिए। कर लीजिए उनसे भी छोटी सी मुलाकात।

खास बातें

1 साइंस फिक्शन पर आधारित जापानी कॉमेडी ड्रामा।

2 इसे फुजीमोटो हीरोशी ने बनाया था।

3 इसकी पहली प्रिंटेड सीरीज दिसंबर 1969 में आई थी। लगातार यह 6 साल तक 6 मैग्जीन में प्रकाशित हुआ।

4 इसकी हर कहानी की कॉमेडी के अंत में एक संदेश जरूर होता है।

5 शोगाकुकन ने 1344 कहानियां तैयार की थी। इसके 45 वॉल्यूम तैयार किए गए थे। इनके मास्टर प्रिंट तकाओका सेंट्रल लायब्रेरी में सुरक्षित हैं।

रंग भरो

क्या आप जानते हैं

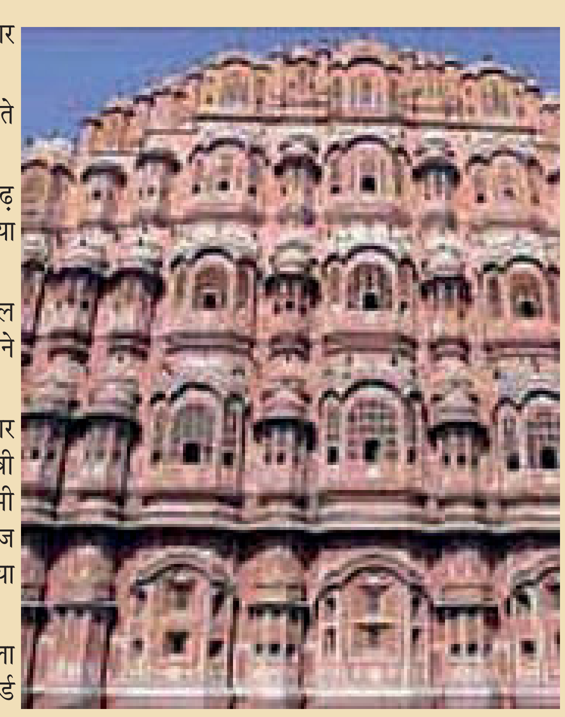

1 विश्व की सबसे ऊंची मीनार कुतुब मीनार है जो भारत में है।

2 नेपाल की संसद को राष्ट्रीय पंचायत कहते हैं।

3 राजस्थान के बीकानेर में स्थित जूनागढ़ किले का निर्माण राजा जय सिंह ने करवाया था।

4 राजस्थान के जयपुर में स्थित हवा महल का निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था।

5 फिल्म जगत के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार ऑस्कर पुरस्कार की शुरुआत 1929 ईसवी में हुई थी। यह पुरस्कार नेशनल अकादमी ऑफ मोशन पिक्चर ऑर्ट्स एंड साइंसेज संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से दिया जाता है।

6 ऑस्कर पाने वाली पहली भारतीय महिला भानु अथैय्या हैं, जिन्हें गांधी फिल्म में रिचर्ड एटनबर्ग की कॉस्ट्यूम डिजाइनिंग के लिए यह पुरस्कार दिया गया था।

7 दांडी मार्च 1930 वह आंदोलन है, जिसे प्रतिष्ठित टाइम मैगजीन ने दुनिया का इतिहास बदलने वाले प्रथम दस आंदोलन में शामिल किया है।

8 ऋग्वेद काल में व्यापारियों को पणि कहा जाता था।

9 छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है, जहां पर पांच रुपए में दाल-भात (दाल-चावल) देने की योजना शुरू की गई है।

10 ऑस्कर के साथ ही नोबेल पुरस्कार को भी प्राप्त करने वाले एकमात्र व्यक्ति हैं- जॉर्ज बनार्ड शॉ। इन्हें 1925 में साहित्य के लिए नोबेल और 1938 में बेस्ट स्क्रीन प्ले के लिए ऑस्कर पुरस्कार दिया गया।

11 पिनकाओ (थाईलैंड) दुनिया के सर्वश्रेष्ठ चावल के किस्मों में से एक है।

दूध नाप दो

शेख चिल्ली दूध लेने पहुंचे, पर जाने क्या हुआ जो हलवाई उनपर हंस पड़ा। आप भी पढ़ें और जानें हंसने की वजह क्या थी...

शेख चिल्ली जब छोटे थे, तब की बात है। घर के दरवाजे एक बजाजी आया था, जिससे मां ने कपड़े का मोल भाव किया, फिर एक रुपए में एक गज कपड़ा ले लिया। बजाज को कपड़ा नापते और फिर उसे फाड़ते हुए, शेख चिल्ली ने बड़े ध्यान से देखा।

अगले दिन मां ने अठन्नी देकर कहा-

'जाकर दूध ले आओ।'

वे हलवाई के दुकान पर पहुंच गए। हलवाई किसी दूसरे ग्राहक के लिए दूध तैयार कर कर रहा था। एक बर्तन से दूसरे बर्तन में दूध की धार देखकर, शेख को वो कपड़े की तरह दिखाई दी। या कहो बजाज के कपड़ा नापने का दृश्य आंखों के सामने नाच गया। हलवाई से उन्होंने कहा-

'दूध दे दो...।'

'कितना...?'

कितने का मामला अटक गया। दिमाग पर जोर देकर मियां चिल्ली ने सोचा- एक रुपए का एक गज कपड़ा बजाज ने फाड़ा था, तो आठ आने का आधा गज आएगा। झट से बोले-

'आधा गज दे दो...।'

आधा गज दूध की बात सुनकर हलवाई हंस दिया। दुकान पर खड़े आम ग्राहक हंसते-हंसते लोट-पोट हो गए। चिल्ली मियां सिर खुजाते देर तक यही सोचते रहे कि इसमें हंसने की क्या बात थी। बहरहाल, उन्होंने हलवाई को अठन्नी पकड़ाई, दूध लिया और घर लौट आए।